

19. गुरू-पर्व

डॉ० राममूर्ति वासुदेव 'प्रशांत'

भारत महापुरुषों और अवतारों का देश है। यहाँ अनेक ऋषि-मुनि, साधु-सन्त और महात्मा-धर्मात्मा पैदा हुए जिन्होंने अपने ज्ञान के प्रकाश से संसार को अज्ञान के अन्धकार से बाहर निकाला। सिख धर्म के महान् गुरू भी ऐसे ही सन्त थे जिन्होंने भारत की जनता के उद्धार एवं उत्थान के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। उन्होंने भारतीय समाज में भेद-भाव मिटाने और जात-पात को समाप्त करने का प्रयास किया। उन्होंने अपने अमूल्य आदर्शों से देश की बुराइयों को दूर करने की कोशिश की और भारत की जनता में फिर से नया जीवन फूंक दिया। उन में से अनेक ने तो मुसलमानों के अत्याचारों से त्राहि-त्राहि कर रही हिन्दू जाति के लिए अपने जीवन तक का बलिदान कर दिया और हँसते-हँसते सर्वस्व देश तथा जाति पर न्योछावर कर दिया।

सिख धर्म के दस महान् गुरू हुए हैं जिन के नाम इस प्रकार हैं— गुरू नानक देव, गुरू अंगद देव, गुरू अमर दास, गुरू राम दास, गुरू अर्जुन देव, गुरू हरगोविन्द साहिब, गुरू हरिराय साहिब, गुरू हरिकिशन साहिब, गुरू तेग बहादुर और गुरू गोविन्द सिंह। इन सभी गुरूओं के प्रकाश दिवस, बलिदान दिवस अथवा निर्वाणदिवस गुरूपर्व के रूप में मनाये जाते हैं। इनमें से भी पाँच गुरूओं के पवित्र दिवसों की अपनी अलग ही महिमा है।

सिख धर्म के प्रवर्तक गुरू नानक देव जी हुए हैं जिन का प्रकाश दिवस कार्तिक मास की पूर्णिमा को गुरूपर्व के रूप में मनाया जाता है। गुरू जी का सारा जीवन लोगों में समानता की भावना स्थापित करने, हिन्दू जाति की रक्षा और लोगों में व्याप्त पाखंड एवं आडम्बर को दूर करने में बीता। वे सदैव यही करते थे कि धर्म के नाम पर झगड़े बिल्कुल व्यर्थ हैं। उन्होंने हिन्दू और मुसलमानों में व्याप्त भेदभावों को अपने उपदेशों के अमृत से दूर किया। गुरू श्री रामदास जी ने अमृतसर की स्थापना की थी। श्री गुरू अर्जुन देव जी ने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए लाहौर में अपना बलिदान दे दिया। उन का यह बलिदान-दिवस गुरू-पर्व के रूप में ज्येष्ठ शुदि चौथ को मनाया जाता है। गुरू श्री तेग बहादुर जी ने हिन्दू जाति की रक्षा के लिए देहली में अपना बलिदान दिया था। उन्हें उनके बालपुत्र गोविन्द सिंह ने ही जो बाद में दसवें गुरू हुए इस महान् बलिदान के लिए प्रेरित किया था। बेटे की प्रेरणा से ही गुरू तेग बहादुर जी देहली की ओर चल दिये। देहली पहुँचने पर अत्याचारी औरंगजेब ने उनका सिर उतार लिया। उन की स्मृति में देहली का शीशगंज गुरूद्वारा बना है। गुरू तेग बहादुर जी का यह बलिदान-दिवस 12 माघ शुदि पंचमी को गुरू-पर्व के रूप में मनाया जाता है। दशम पातशाही गुरूवर गोविन्द सिंह जी का जन्म पौष मास की शुक्ल पक्ष की सप्तमी को गुरूपर्व के रूप में मनाने की रीति है। गुरू गोविन्द जी का जन्म गुरू तेगबहादुर के घर सन् 1666 में पटना में हुआ था। गुरू जी शरीर से वीर, वाणी से प्रभावशाली, बुद्धि से चिन्तनशील और मन से भगवान् के भक्त

थे। उन्होंने प्रत्येक हिन्दू को वीरता का पाठ पढ़ाया और अपने नाम के बाद सिंह लगाने को कहा। उन्होंने सभी को कच्छा, कड़ा, कृपाण, कंधा और केश धारण करने को कहा, जो पांच ककारों के नाम से जाने जाते हैं। गुरु जी का सारा जीवन अन्याय और अधर्म के विरुद्ध लड़ने में बीता। उन्होंने समाज की कुरीतियों, जात-पात तथा ऊँच-नीच के भेदभाव को कम करने की हमेशा कोशिश की। उन्होंने सभी को मिलकर अमृत छकने को कहा। गुरु गोविन्द सिंह जी अत्यन्त प्रभावशाली व्यक्तित्व के स्वामी थे। वे पंजाब के वीरों को प्रोत्साहित करने वाले, मुसलमानों के चुंगल से हिन्दुओं को त्राण दिलाने वाले, हिन्दुओं की चोटी, यज्ञोपवीत, धर्मस्थान एवं धर्मग्रन्थों की रक्षा करने वाले और दुष्टों को मुँह तोड़ उत्तर देने वाले थे। इतिहास में उनका नाम हमेशा अमर रहेगा।

गुरु-पर्व अत्यन्त श्रद्धा एवं भक्ति से मनाये जाते हैं। प्रत्येक गुरुपर्व के पावन अवसर पर गुरुद्वारों में खूब साज-सज्जा की जाती है। रोशनी की जाती है जिसमें गुरुद्वारे बिजली के प्रकाश में जगमगा उठते हैं। गुरुग्रन्थ साहिब को फूल मालाओं से सजाया जाता है। प्रातः चार-पाँच बजे नगर अथवा गाँव के प्रमुख स्थानों पर प्रभात फेरियां निकाली जाती है, गुरुओं की स्तुति में भजन-कीर्तन गाये जाते हैं और पवित्र गुरु ग्रन्थ साहिब से शब्दों (सबदों) का पाठ किया जाता है। शाम के समय गुरुद्वारों में पटाखे आदि भी चलाये जाते हैं।

गुरु-पर्व से एक दिन पूर्व नगर-कीर्तन का आयोजन किया जाता है। इस में ट्रैक्टर-ट्रालियों पर गुरुओं की झांकियां निकाली जाती हैं। इन में भजन-मंडलियां शामिल होती हैं और सारे शहर की परिक्रमा की जाती है। स्कूलों के बच्चे, स्त्री-पुरुष सभी बड़े उत्साह से इस में भाग लेते हैं। पाँच-प्यारे जुलूस के आगे-आगे चलते हैं। पीछे गुरु ग्रन्थ साहिब की पालकी होती है। जुलूस के आगे गतका खेलने की भी प्रथा है। यह पारम्परिक युद्ध शैली का एक नमून होता है। इस जुलूस में बड़े-बड़े धार्मिक और सामाजिक नेता भी भाग लेते हैं।

गुरु पर्व के शुभ अवसर पर गुरुद्वारों में पवित्र गुरु ग्रन्थ साहिब का अंखड पाठ किया जाता है। श्रद्धालु बड़े उत्साह से पाठ सुनते हैं और उस में भाग भी लेते हैं। कीर्तन दरबार लगता है और संगतों में पाठ के बाद भोग के रूप में हलवा बांटा जाता है।

प्रत्येक गुरुपर्व को गुरुद्वारों में विशाल लंगर का आयोजन होता है। इस में श्रद्धालु बड़ी श्रद्धा से बढ़-चढ़ कर भाग लेते हैं और सेवा कार्य करना पुण्य का काम समझते हैं। वे लंगर पकाना, जूठे बर्तन साफ करना, संगतों की सेवा करना आदि काम को अत्यन्त पवित्र समझते हैं। सभी लोग अमीर अथवा गरीब उस लंगर में जाते हैं और परसादा ग्रहण करके स्वयं को धन्य मानते हैं। ग्रीष्म ऋतु में गुरुपर्व आने पर छबीलें लगाई जाती हैं जिनमें शीतल और मिठा जल बांटा जाता है।

इन गुरु-पर्वों के अवसर पर श्रद्धालु लोग पांच तख्त साहिबान में तथा वहां पवित्र सरोवरों में स्नान करना पुण्य का कार्य समझते हैं। वहां वे अपनी श्रद्धा और सामर्थ्य के अनुसार भेंट आदि चढ़ाते हैं और अपने जीवन को सार्थक बनाते हैं। इन पांच तख्त साहिबान के नाम इस

प्रकार हैं-श्री अकाल तख्त साहिब अमृतसर (पंजाब), श्री हजूर साहिब, नंदेड (महाराष्ट्र) तथा श्री दमदमा साहिब तलवंडी साबो की बठिण्डा (पंजाब)।

इस प्रकार अपने महान् गुरुओं की पावन स्मृति में गुरु-पर्व मनाना सिख धर्म का सब से बड़ा गुण है। इससे लोगों की अपने धर्म के प्रति आस्था तो बढ़ती है, साथ-साथ महान् गुरुओं की सद्शिक्षायें और सिद्धान्त उन्हें समय-समय पर आत्मोन्नति की प्रेरणा देते रहते हैं। आज के युग में बढ़ रही साम्प्रदायिकता की विषबल्लरी को समाप्त करनेके लिए हमें गुरुओं द्वारा स्थापित समता की भावना को सदैव अपने हृदय में निहित रखना चाहिए। उससे उत्तरोत्तर भारतवर्ष का उत्कर्ष एवं उत्थान होता रहेगा।

गुरुपर्वों के अवसर पर हमें महान् गुरुओं द्वारा की गई जाति, धर्म, देश और मानवता के प्रति की गई सेवाएं बार-बार स्मरण हो जाती हैं। उनका अनुकरणीय तप, त्याग और आत्मोत्सर्ग आने वाली पीढ़ियों को सदैव-सदैव के लिए प्रेरणा देता रहेगा।

* अभ्यास *

1. निम्नलिखित प्रश्नों के अतिलघु उत्तर दीजिए-

- (क) सिख धर्म के प्रवर्तक कौन थे ?
- (ख) अमृतसर शहर की स्थापना किस ने की ?
- (ग) किस गुरु ने देहली में बलिदान दिया था ?
- (घ) सिख धर्म के पांच ककार कौन-कौन से हैं ?
- (ङ) श्री केसगढ़ साहिब गुरुद्वारा कहां पर स्थित है ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए (चार-पाँच पंक्तियाँ) :-

- (क) गुरु नानक देव ने लोगों को क्या उपदेश दिए ?
- (ख) गुरु गोविन्द सिंह ने अपने जीवन में क्या-क्या कार्य किये ?
- (ग) गुरु पर्व पर नगर-कीर्तन का कब और कैसे आयोजन किया जाता है ?

3. गुरुपर्व के समारोह का सार अपने शब्दों में लिखिए।

